प्रारंभिक नगर

कक्षा 6 विज्ञान (सामाजिक)

Complete Study Notes

सीखने के उद्देश्य

हड़प्पा सभ्यता की उत्पत्ति और उसके महत्व को समझना। हड़प्पा नगरों की योजना, वास्तुकला, जीवन शैली, शिल्प, व्यापार तथा प्रमुख व्यवसायों का अध्ययन करना। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, धोलावीरा और लोथल जैसे महत्वपूर्ण नगरों के बारे में जानना तथा इस महान सभ्यता के पतन के संभावित कारणों को समझना।

प्रारंभिक नगरों का परिचय

हड़प्पा सभ्यता, जिसे सिंधु घाटी सभ्यता भी कहा जाता है, विश्व की सबसे प्राचीन नगर सभ्यताओं में से एक थी। यह लगभग 4,700 वर्ष पूर्व सिंधु नदी और उसकी सहायक नदियों के किनारे विकसित हुई। इस सभ्यता की खोज ने प्राचीन भारत के इतिहास के बारे में हमारी समझ को पूरी तरह बदल दिया और यह सिद्ध किया कि उस समय भी अत्यंत विकसित नगर बस चुके थे।

पुरातत्वविदों ने भारत और पाकिस्तान के अनेक स्थानों पर हड़प्पा सभ्यता के नगरों की खोज की है। इन नगरों से पता चलता है कि उस समय के लोग नगर नियोजन, स्वच्छता, व्यापार, शिल्पकला तथा प्रशासन में अत्यंत उन्नत थे।

हड़प्पा की खोज और नगरों का विकास

लगभग 150 वर्ष पहले पंजाब में रेलवे लाइन बिछाते समय इंजीनियरों को हड़प्पा के प्राचीन अवशेष मिले। उन्होंने उन स्थानों से हजारों पकी हुई ईंटें निकालकर रेलवे निर्माण में उपयोग कर लीं, क्योंकि उन्हें उनके ऐतिहासिक महत्व का ज्ञान नहीं था। बाद में पुरातत्वविदों ने व्यवस्थित खुदाई करके यह सिद्ध किया कि यह स्थान विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक का भाग था।

इसके बाद अनेक अन्य नगरों की खोज हुई और इतिहासकारों ने इन्हें मिलाकर हड़प्पा सभ्यता का नाम दिया। ये नगर नदियों के किनारे बसे थे जहाँ कृषि, जल तथा व्यापार के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ उपलब्ध थीं। हड़प्पा के नगर सुव्यवस्थित सड़कों, मजबूत भवनों, बाजारों तथा आवासीय क्षेत्रों के साथ अत्यंत योजनाबद्ध ढंग से बनाए गए थे।

नगर नियोजन और वास्तुकला

हड़प्पा सभ्यता की सबसे बड़ी विशेषता उसका उत्कृष्ट नगर नियोजन था। अधिकांश नगर दो मुख्य भागों में विभाजित थे—नगर दुर्ग (Citadel) तथा निचला नगर (Lower Town)।

नगर दुर्ग ऊँचे चबूतरे पर बनाया जाता था जहाँ महत्वपूर्ण सार्वजनिक भवन तथा प्रशासनिक संरचनाएँ स्थित थीं। निचले नगर में सामान्य लोग रहते थे। नगरों की सड़कें सीधी थीं और एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं, जिससे यातायात और आवागमन व्यवस्थित रहता था।

अधिकांश मकान मजबूत पकी हुई ईंटों से बने होते थे। कई मकानों में आँगन, स्नानघर, कुएँ तथा जल निकासी की व्यवस्था होती थी। हड़प्पा सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में उसकी उन्नत जल निकासी व्यवस्था थी। ढकी हुई नालियाँ प्रत्येक घर से निकलकर मुख्य नालियों से जुड़ती थीं, जिससे पूरे नगर में स्वच्छता बनी रहती थी।

> **महान स्नानागार:** मोहनजोदड़ो का प्रसिद्ध महान स्नानागार इस सभ्यता की उत्कृष्ट इंजीनियरिंग का अद्भुत उदाहरण है। यह जलरोधी ईंटों से बना विशाल स्नान कुंड था, जिसका उपयोग संभवतः धार्मिक अनुष्ठानों और सामूहिक स्नान के लिए किया जाता था।

दैनिक जीवन, शिल्प और व्यापार

हड़प्पा सभ्यता के लोग कृषि, व्यापार और विभिन्न प्रकार के शिल्प कार्यों में निपुण थे। किसान खेती करते थे, जबकि कारीगर मिट्टी के बर्तन, आभूषण, धातु के उपकरण, खिलौने, मूर्तियाँ तथा सुंदर मोहरें बनाते थे। ताँबा, काँसा, सोना, चाँदी, पत्थर और मिट्टी का उपयोग विभिन्न वस्तुएँ बनाने में किया जाता था।

बच्चे मिट्टी से बने खिलौनों, पशु आकृतियों और पहियों वाली गाड़ियों से खेलते थे। व्यापारियों का दूर-दूर तक व्यापार होता था और वे अन्य क्षेत्रों से ताँबा, टिन, कीमती पत्थर तथा शंख जैसी वस्तुएँ मँगाकर उनका उपयोग सुंदर वस्तुएँ बनाने में करते थे। इस विकसित व्यापार व्यवस्था ने हड़प्पा सभ्यता को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाया और दूरस्थ क्षेत्रों के साथ उसके संबंध स्थापित किए।

हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख नगर

हड़प्पा और मोहनजोदड़ो इस सभ्यता के सबसे प्रसिद्ध नगर थे। इनके अतिरिक्त धोलावीरा और लोथल भी अत्यंत महत्वपूर्ण नगर थे।

- **धोलावीरा:** वर्तमान गुजरात में स्थित था और इसकी विशेषता यह थी कि यह तीन भागों में विभाजित था तथा विशाल पत्थर की दीवारों से सुरक्षित था। यहाँ वर्षा जल संग्रह की उन्नत व्यवस्था भी विकसित की गई थी।
- **लोथल:** गुजरात का एक महत्वपूर्ण बंदरगाह नगर था। यहाँ विशाल गोदी (Dockyard) बनाई गई थी जहाँ जहाज़ आकर व्यापारिक वस्तुओं का आदान-प्रदान करते थे। यह नगर प्राचीन समुद्री व्यापार का महत्वपूर्ण केंद्र था।

हड़प्पा सभ्यता का पतन

लगभग 3,900 वर्ष पूर्व हड़प्पा सभ्यता का धीरे-धीरे पतन प्रारंभ हुआ। अनेक नगरों को छोड़ दिया गया, व्यापार कम होने लगा, लेखन प्रणाली का प्रयोग बंद हो गया तथा नगरों की सार्वजनिक व्यवस्थाएँ कमजोर पड़ गईं।

इतिहासकारों के अनुसार नदियों का मार्ग बदल जाना, बार-बार आने वाली बाढ़, लंबे समय तक सूखा पड़ना, जंगलों की कटाई तथा प्राकृतिक संसाधनों की कमी इसके संभावित कारण हो सकते हैं। यद्यपि इसके वास्तविक कारण आज भी पूरी तरह स्पष्ट नहीं हैं, फिर भी यह सभ्यता मानव इतिहास की सबसे महान नगर सभ्यताओं में गिनी जाती है। आज भी पुरातत्वविद् नई खोजों के माध्यम से इस महान सभ्यता के बारे में नई जानकारियाँ प्राप्त कर रहे हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. हड़प्पा सभ्यता क्या थी?
2. हड़प्पा नगर के दो मुख्य भाग कौन-से थे?
3. मोहनजोदड़ो का महान स्नानागार क्यों प्रसिद्ध है?
4. गुजरात के दो प्रमुख हड़प्पा नगरों के नाम लिखिए।
5. हड़प्पा सभ्यता के पतन के कोई दो कारण लिखिए।

उत्तर

- **उत्तर 1:** हड़प्पा सभ्यता या सिंधु घाटी सभ्यता विश्व की सबसे प्राचीन नगर सभ्यताओं में से एक थी, जो लगभग 4,700 वर्ष पूर्व सिंधु नदी के किनारे विकसित हुई थी।
- **उत्तर 2:** हड़प्पा नगर के दो मुख्य भाग थे—नगर दुर्ग (Citadel) और निचला नगर (Lower Town)।
- **उत्तर 3:** महान स्नानागार एक विशाल जलरोधी सार्वजनिक स्नान कुंड था, जिसका उपयोग संभवतः धार्मिक अनुष्ठानों और सामूहिक स्नान के लिए किया जाता था।
- **उत्तर 4:** गुजरात के दो प्रमुख हड़प्पा नगर हैं—धोलावीरा और लोथल।
- **उत्तर 5:** हड़प्पा सभ्यता के पतन के संभावित कारणों में नदियों का मार्ग बदलना, बाढ़, सूखा, वनों की कटाई तथा पर्यावरणीय परिवर्तन शामिल हैं।